E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2025; 7(11): 09-11
Received: 15-07-2025
Accepted: 20-08-2025

डॉ. इन्दु भूषण प्रसाद
सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, दाउदनगर महाविद्यालय दाउदनगर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. इन्दु भूषण प्रसाद
सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, दाउदनगर महाविद्यालय दाउदनगर, बिहार, भारत

देवी अहिल्याबाई होल्करः एक क्रांतिकारी शासिका (1767–1795)

इन्दु भूषण प्रसाद

सारांश
अहिल्याबाई होल्कर 18वीं शताब्दी में भारत की एक महान एवं आदर्श शासिकाओं में से एक थीं। वे मराठा साम्राज्य के अंतर्गत मालवा राज्य की रानी थीं जिन्होने अपने कुशल प्रशासन, न्यायप्रियता और जनता के कल्याण कार्यो से इतिहास में अमर स्थान प्राप्त किया। अपने पति खंडेराव होल्कर की मृत्यु के बाद अहिल्याबाई ने अद्भुत साहस एवं दूरदर्शिता के साथ शासन की बागडोर संभाली। उन्होने समाज के उत्थान हेतु अनेक मंदिरों, घाटों, कुओं एवं सड.को का निर्माण कराया जिससे सांस्कृतिक और सामाजिक विकास को बढावा मिला। उनके शासनकाल में राज्य में शांति, समृद्धि एवं समानता का वातावरण था। अहिल्याबाई ने महिलाओं की शिक्षा एवं सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया तथा धार्मिक सहिष्णुता और ममानवीय मूल्यों का बढावा दिया। उनका शासन आदर्श नीतियों, धर्म एवं करूणा पर आधारित था। अहिल्याबाई होल्कर भारतीय इतिहास में नारी शक्ति, सदाचार और सेवाभाव की प्रतीक मानी जाती है । उनका जीवन आनेवाली पीढियों के लिए प्रेरणास्रोत है।

कुटशब्दः अहिल्याबाई होल्कर, मालवा राज्य, न्यायप्रियता, सामाजिक विकास, महिला सशक्तिकरण, धार्मिक सहिष्णुता, नारी शक्ति, आदर्श शासन

प्रस्तावना
16वीं – 17वीं सदी में भारत में हुए धार्मिक आंदोलन ने भारत में कई नई शक्तियों को जन्म दिया, उन्ही में से एक प्रमुख है मराठा। इनका क्षेत्र वर्तमान महाराष्ट्र व महाराष्ट्र से सटे मध्य प्रदेश का क्षेत्र है।[1] यूँ तो मराठा शक्ति का विकास शिवाजी (1627–1680) को जाता हैं, परन्तु क्रमेतर इसमें एक से बढ कर एक विभूति का अभ्युदय हुआ उन्ही में से एक नाम है देवी अहिल्याबाई होल्कर (1725–1795) । देवी अहिल्याबाई होल्कर का संबंध मराठो के अर्द्ध–स्वतंत्र राज्य इंदौर के होल्कर परिवार से था। 18वीं शताब्दी में मराठा सरदारों द्वारा चार अर्द्ध–स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की गई– बड़ौदा के गायकवाड़, इंदौर के होल्कर, नागपुर के भोसले एवं ग्वालियर के सिंधिया।[2]
अहिल्याबाई होल्कर का जन्म 31 मई 1725 ई. में महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर जिले के जामखेड़ ग्राम चौंढी में हुआ था। इनके पिताजी का नाम मानकोजी शिंदे था और वे धनगर समाज (परिहार गोत्र) से सम्बध थे। इनके पिताजी बहुत छोटे किसान थे और बमुश्किल से 10–12 बीघा जमीन जोतते थे। अहिल्याबाई होल्कर बाल्यकाल से ही ओजस्वी प्रतिभा से ओत–प्रोत थीं। अपने प्रारम्भिक जीवन से ही वह भगवान में विश्वास रखती थी और प्रतिदिन शिवजी के मंदिर पूजा आदि करने जाती थीं। जब देवी अहिल्याबाई केवल 10 या 12 वर्ष की थी, तब ही उनका विवाह इंदौर के प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होल्कर के पुत्र खंडेराव के साथ हुआ था। मल्हारराव होल्कर, होल्कर राजवंश के प्रथम राजकुमार थे, जिसने इंदौर पर शासन स्थापित किया। पेशवा बाजीराव की सहायता करने पर उन्हे मालवा की सूबेदारी मिली। मल्हारराव होल्कर न सिर्फ सैन्य दक्षता में निपुण थे, वरन् वे कूटनीति के भी माहिर खिलाड़ी थे। परंतु उनका पुत्र खंडेराव होल्कर चंचल मस्तिष्क व अस्थिर चित का व्यक्ति था जिसका मन राजकाज में तनिक भी नही लगता था। मल्हार राव होल्कर इस बात को भलीभाँति जानते वं समझते थे। इसीकारण, मल्हार राव होल्कर अपने इकलौते बेटे खंडेराव के लिए ऐसी पत्नी चाहते थे जो गुणवानं हो औरं राजगद्दी संभालने में उनके बेटे की मदद कर सके । इसी दौरान उनकी मुलाकात अहिल्याबाई से हुई। वे और बाजीराव पेशवा भ्रमण के दौरान चनुडी गांव से गुजर रहे थे, तभी शाम की आरती के दौरान एक लड़की के भजन ने उनका ध्यान खींचा । वह लड़की कोई और नही बल्कि अहिल्याबाई ही थी। वे अहिल्याबाई के गुणों और मूल्यों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होने बेटे खंडेराव होल्कर के लिए मानकोजी भिंदे (अहिल्याबाई के पिता) से अहिल्याबाई कां हाथ माँग लिया । मानकोजी भिंदे ने भी तक्षण बेटी कां शादी स्वीकारं कर लियां और इसं तरहं अहिल्याबाईं कां विवाह बाल्यकांल मे ही खंडेराव होल्कर के साथ हो गया । [3]

शादी के बाद अहिल्याबाई अपने ससुराल महेश्वर आ गई। अहिल्याबाई और खंडेराव को एक पुत्र मालेराव और एक पुत्री मुक्ताबाई हुई। साल 1754 में अहिल्याबाई के पति कुंभेर की लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हो गए। उस समय उनकी उम्र मात्र 29 वर्ष ही थी अर्थात 29 वर्ष की अवस्था मे वह विधवा हो गई। पति की मृत्यु के पश्चात् वह अंदर से काफी टूट गई और सती होने का फैसला ले लिया। यह समाचार ज्योहिं मल्हार राव होल्कर को प्रापत हुई, उन्होने अहिल्याबाई को काफी समझाया–बुझाया और न सिर्फ उनके मन–मस्तिष्कं आए नकारात्मक विचारों से उन्हें दूर किया बल्कि अपने साथ रखकर उन्होने अहिल्याबाई को शासन–व्यवस्था की गूढ़ रहस्यों को समझाया और सैन्य तथा कूटनीतिक प्रशिक्षण देना प्रारम्भ कर दिया। अहिल्याबाई अब शासन कार्य में अपने ससुर का काफी मदद करने लगी। इसी बीच 20 मई 1766 को मल्हार राव होल्कर भी मृत्यु को प्राप्त कर लिए। 1766 में मल्हार राव होल्कर की मृत्यु के पश्चात् मालेराव होल्कर राजा बने, किंतु एक वर्ष पश्चात् ही उनकी भी मृत्यु हो गई और इस तरह शासनकार्य पूरी तरह अहिल्याबाई होल्कर के हाथों में आ गया।[4]

11 दिसम्बर 1767 को देवी अहिल्याबाई का मालवा राज्य की महारानी के रूप में राज्याभिषेक हुआ। एक स्त्री का राज्याभिषेक भारतीय इतिहास की एक अनोखी कहानी को प्रदर्शित करती है। यद्यपि इसके पूर्व सातवाहन काल में नयनिका, चंद्रोबले, दिल्ली सल्लतनत काल में रजिया सुल्तान व अकबर के काल में माहम अंगा का नाम लिया जा सकता है। परन्तु ये सभी या तो अल्प काल तक ही शासन कार्य की या अप्रत्यक्षरूपेण शासन कार्य संपादित की। परन्तु अहिल्याबाई ने लगभग 28 वर्षो तक शासन कार्य किया और उनकां यह शासनकाल न सिर्फ मालवा तक सीमित रहा वरन् उनके कार्य संपूर्ण भारतीय व्यवस्था को प्रभावित करने का कार्य किया। शासन–सत्ता अपने हाथों में लेने के पश्चात् देवी अहिल्याबाई ने महेश्वर, जो नर्मदा नदी के तट पर था, को अपनी राजधानी बनाया। यह शहर इंदौर से 91 किलोमीटर दूर, नर्मदा के उत्तरी तट पर स्थित है। उन्होने शहर को कई इमारतों और सर्वाजनिक कार्यों से सुशोभित किया। उन्होने यहाँ पर विशाल महल का निर्माण किया और साथ ही कई मंदिरों का भी निर्माण किया। एक किले और नदी के किनारे घाटों (चौड़े पत्थर की सीढियाँ जो नदी तक जाती है) का घर निर्मित करवाया। मालवा की महारानी के रूप में, धर्म का संदेश फैलाने में और औधोगीकरण के प्रचार–प्रसार में उनका महत्वपूर्ण योगदान था।[5]

अहिल्याबाई ने न सिर्फं अपने राज्य का विकास किया, वरन् अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत–भर के प्रसिद्ध तीर्थो और स्थानों में मंदिर बनवाए, घाट बनवाएं, कुँओ और बावड़ियों का निर्माण किया, मार्ग बनवाए, भूखों के लिए अन्नसत्र (अन्यक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याउ बिठलाई, मंदरों में विद्धानों की नियुक्ति शास्त्र के जाननेवाले की की। पुजारी की नियुक्ति जाति व वंश के आधार पर न कर योग्यता की प्रधानता दी।[6]

अहिल्याबाई होल्कर ने अपने राज में काशी के विश्वनाथ मंदिर, गुजरात के सोमनाथ मंदिर, बिहार के गया स्थित विष्णुपद मंदिर, महाराष्ट्र के परली में स्थित बैजनाथ ज्योतिर्लिंग समेत देश के विभिन्न हिस्सों में मंदिरों का पुननिर्माण करवाया। काशी में गंगा किनारे मणिकर्णिका घाट का निर्माण करवाने का श्रेय भी अहिल्याबाई होल्कर को ही जाता है।[7] मांडू में नीलकंठ महादेव मंदिर भी उन्ही की देन है। इन सबों के अतिरिक्त उन्होने देश के ज्यादातर जरूरी जगहों पर भोजनालय और विश्रामागृह आदि की स्थापना करवाई। उन्होने शोरभाह के तर्ज पर कलकत्ता से बनारस तक सड़क का भी निर्माण करवाया।[8] पुरी के जगन्नाथ मंदिर से लेकर गुजरात में द्वारका, उत्तर में केदारनाथ से लेकर दक्षिण में रामेश्वरम तक अहिल्याबाई ने कुछ न कुछ निर्माण कराया और उसके रखरखाव में मदद की। उन्होने अपनी निजी संपति से पूरे देश के मंदिरों में गंगाजल भिजवाया, जिसे बांस की कावंड में ले जाया गया।[9]

अहिल्याबाई ने आत्म प्रतिष्ठा के झूठे मोह का त्याग करके सदा न्याय करने का प्रयत्न करती रहीं – मरते दम तक। रानी न्याय करते समय अपने पराये में जरा भी भेद नहीं करती थी। व्यक्ति से लेकर पशुओं तक के दर्द को समझती थी। एक बार क्रूरता के मामले में बेटे के दोषी पाए आने पर अहिल्याबाई बेटे को रथ के नीचे कुचलकर मारने के लिए निकल गई। दरअसल एक बार बेटे मालेजीराव रथ में सवार होकर राजबाड़ा के पास से गुजर रहे थे। इसी दौरान सड़क किनारे एक गाय का छोटा सा बछड़ा खड़ा था। जैसे ही मालेजी राव का रथ मौके से गुजरा, बछड़ा कूदते हुए सड़क पर आ गया। रथ की चपेट में आकर वह बुरी तरह घायल हो गया। राजा मालेजीराव बिना रथ को रोके, मौके से चले गये। इसी के बाद घायल बछड़े की तड़प–तड़प कर मौत हो गई। अपने बछड़े को मरता देख गाय उसी के पास बीच सड़क पर बैठ गई। गाय अपने बछड़े को नहीं छोड़ रही थी। मालेजी राव जिस जगह से निकले थे, कुछ देर बाद उसी रूट से अहिल्याबाई निकली। उन्होने देखा कि एक गाय अपने मृत बछड़े के पास बैठी हुई है, लोगों के हटाने के बाद भी वह गाय मौके से नही हट रही है। यह देखते ही अहिल्याबाई का दिल पसीज गया। उन्होने रथ रूकवाया और घटनाक्रम की जानकारी ली। उन्होनें सैनिकों को आदेश दिया कि गाय के बछड़े को मारने वाले का पता लगाया जाए। अहिल्याबाई को जैसे ही पता चला कि गाय के बछड़े की मौत उनके बेटे मालेजी राव के रथ के सामने आने से हुई है तो उन्होनें तुरंत दरबार में मालेजीराव की धर्मपत्नी मेनाबाई को बुलाया। अहिल्याबाई ने पूछा कि अगर कोई व्यक्ति किसी की माँ के सामने उसके बेटे की हत्या कर दे तो उसे क्या दंड देना चाहिए। मालेजी राव की पत्नी ने जवाब दिया कि उसे मृत्युदंड देना चाहिए। इसी के बाद अहिल्याबाई ने आदेश दिया कि मालेजीराव को हाथ पैर बाँध दिया जाए और उन्हे उसी जगह व उसी तरह मृत्युदंड दिया जाएगा, जिस तरह गाय की बछड़े की मृत्यु हुई थी। बेटे मालेजीराव को कुचलने का आदेश सुनते ही दरबार में सभीलोग हैरान रह गए। रानी अहिल्याबाई होल्कर गाय को न्याय देने के लिए रथ से बेटे को कुचलने की लिए सवार होने लगी, लेकिन इस दौरान कोई भी रथ चलाने के लिए सारथी बनने को तैयार नहीं हुआ। रानी ने कुछ देर तो इंतजार किया। इसके बाद खुद ही रथ की कमान अपने हाथों में ले ली। जैसे ही अहिल्याबाई रथ लेकर आगे बढी, वह गाय, जिसका बछड़ा मरा था, रथ के सामने आकर खड़ी हो गई। सैनिकों को गाय हटाने का आदेश दिया। बहुत प्रयास के बाद गाय को हटाया जाता, पर गाय पुनः रथ के सामने आकर खड़ी हो जाती थी। इसपर दरबारी मंत्रियों ने रानी से कहा कि यह गाय भी नहीं चाहती कि किसी और माँ के बेटे के साथ ऐसी घटना हो। गाय रथ के रास्ते में खड़ी रही। इसके बाद रानी को अपना फैसला बदलना पड़ा, जिस जगय यह घटना हुई, उसे आज भी लोग ''आड़ा बाजार'' के नाम से जानते हैं।[10]

देवी अहिल्याबाई ने न सिर्फ धार्मिक व न्याय संबंधी कार्य को फलीभूत करवायी, वरन् तात्कालीन समय में समाज में व्याप्त सती प्रथा जैसी कुरीति पर भी कुठाराघात करने का कार्य की। 1791 ई. में, जब अहिल्याबाई की उम्र लगभग 62 वर्ष थी, दामाद यशवंतराव फणसे की मृत्यु हो गई और उनकी बेटी मुक्ताबाई होल्कर उनकी (पति की) चिता पर सती हो गई। यह घटना अहिल्याबाई को अंदर से झकझोर दिया। परिणामस्वरूप, उसने अपने राज्यक्षेत्र में इसकी पुनरावृति न हो, को लेकर एक मुहिम की शुरूआत की। अपने दरबारी मंत्रियों व सिपाहियों को इस तरह की घटना को रोकने के लिए मुहिम चलवायी। यह ऐसी कुप्रथा थी, जिसे अकबर जैसे महान शासक ने भी इसके उन्मूलन हेतु लोगों को काफी जागरूक किया। अंततः 4 दिसम्बर 1829 को राजा राममोहन राय के अथक प्रयास से ब्रिटिश भारत के

पहले गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक ने सती प्रथा पर रोक लगाने वाला कानून पारित कर दिया।[11]

इन प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त अहिल्याबाई ने अपने सम्राज्य की आर्थिक विकास हेतु नर्मदा से कई नहरों का निर्माण कर कृषकों को मुफ्त में जल की व्यवस्था की। साथ–ही–साथ फिरोज तुगलक की तरह राज्य में कई आम के बगीचे लगवाए। इंदौर जैसे छोटे से गाँव को एक महानगर के मुहाने पर ला खड़ा करने का श्रेय अहिल्याबाई को ही जाता है। अपने राजधानी माहेश्वर में छोटे–मोटे कई कारखाने स्थापित करवाए। माहेश्वर का साड़ी उधोग, जो बनारस व भागलपुर के सिल्क साड़ी को टक्कर देता है, इसका जीता जागता उदाहरण है।[12]

निस्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि मध्य भारत में, इंदौर की अहिल्याबाई होल्कर का शासन, तीस वर्षो तक चला। यह एक ऐसे काल के रूप में प्रसिद्ध है, जिसके दौरान (इंदौर में) एक उत्तम व्यवस्था और अच्छी सरकार बनी तथा लोगों को समृद्धि प्राप्त हुई। वे एक बहुत ही योग्य शासक और प्रबंधक थीं, जिन्हे अपने जीवनकाल में बहुत सम्मान प्राप्त हुआ। उनकी मृत्यु के बाद, कृतज्ञ लोगो द्वारा उन्हे एक संत के रूप में माना गया।[13]

संदर्भ

1. डॉ. इमत्याज अहमद : मध्यकालीन भारत : एक सर्वेक्षण
2. बी. एल ग्रोवर एव यशपाल – आधुनिक भारत का इतिहास
3. भी.भी. ठाकुर –लाईफ एण्ड लाईफ वर्क ऑफ श्री अहिल्याबाई
4. जोशी गोविन्दराम केशवराम – अहिल्याबाई होल्कर
5. इण्डिया टी.भी. – 31 मई 2024 09.03 AM IST (सुभाष कुमार)
6. आज तक – मुंबई – 1 जून 2023 08.21 AM IST
7. माधुरी देसाई – बनारस रिकन्सट्रक्टेड
8. इण्डिया टी.भी. – 31 मई 2024 09.03 AM IST (सुभाष कुमार)
9. दि प्रिंट – वंदना मेनन, राधव विश्वचंदानी एवं डुमरा लईक (27 जून 2022)
10. डी.एन.ए. इंडिया/धर्म नितिन शर्मा – मार्च 09 2024, 03:33 PM IST
11. श्री सरदेसाई – दी मेन करेन्ट आफॅ मराठा हिस्ट्री
12. श्री सरदेसाई – न्यू हिस्ट्री ऑफ मराठा वाल्यूम–III
13. पं. जवाहर लाल नेहरू – (1946) – भारत एक खोज